ISSN : 2393-9362

साहित्य सरस्वती

जनवरी-मार्च 2019, वर्ष-छह, अंक-इक्कीस

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय, सागर (म.प्र.)

पुस्तक	-	**अलविदा अन्ना**
प्रकाशन	-	प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
लेखिका	-	सूर्यबाला
समीक्षा	-	डॉ. आफरीन खान

यात्रा करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति होती है। मनुष्य यात्रायें करता है और यात्रा के अपने अनुभवों को लिपिबद्ध भी करता है जो यात्रा वृत्तांत कहलाता है। लेखक अपने विश्वास और धारणाओं के साथ यात्रा पर निकलता है, नई जगहों और लोगों के बीच जाता है। इस तरह यात्रा धारणाओं एवं विश्वासों में उथल पुथल और अंतर्क्रियाओं का कारण बनती है। यात्री इन उथल पुथल और अंतर्क्रियाओं को पहचान कर दर्ज करता है। यात्रा वृत्तांत को परिभाषित करते हुए साहित्यकार अरुण प्रकाश लिखते हैं कि ''यात्रा आख्यान यात्रा के क्रम में घटित हुई घटनाओं, दृश्यों एवं यात्री के इन अनुभवों के प्रति निज भावनाओं का वर्णन है।'' यात्रा वृत्तांत में लेखक का अन्तरंग व बहिरंग दोनों होता है जिसे वह हमारे सामने रखता है। हम कह सकते हैं कि ''यात्रा वृत्तांत नई खुलती हुई दुनिया, अंजान लोगों-समाजों-सभ्यताओं संस्कृतियों- जीवन शैलियों को स्वयं में समेटता है पर साथ ही लेखक के निजी विकास का भी आईना होता है।''

किताबों की दुकानों में यात्रा संस्मरण से जुड़ी पुस्तकों की माँग कहानी और उपन्यासों से अपेक्षाकृत कम होती है लेकिन साहित्यिक विकास यात्रा में इनकी अन्यतम ऐतिहासिक भूमिका होती है। हिंदी में यात्रा वृत्तांत की जड़ें बहुत मजबूत और गहरी नहीं हैं। कुछ गिनती के लेखक और थोड़ी सी किताबें ही इस सम्बन्ध में मौजूद हैं। इस दिशा में सर्वाधिक उल्लेखनीय काम राहुल सांस्कृत्यायन ने किया, उनकी प्रसिद्ध रचना ''वोल्गा से गंगा तक'' में। इसके अलावा अज्ञेय की ''अरे यायावर रहेगा याद'', रघुवर की ''हरी घाटी'', निर्मल वर्मा की ''चीड़ों पर चांदनी'' आदि महत्त्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत रहे हैं। इसी श्रृंखला में सूर्यबाला द्वारा रचित ''अलविदा अन्ना'' एक अनूठा यात्रा संस्मरण है जिसमें उन्होंने अमेरिका प्रवास के दौरान अपने विभिन्न अनुभवों को साँझा किया है। इस संस्मरण में सूर्यबाला ने केवल बाह्य स्थानों की ही नहीं बल्कि अन्तःप्रदेशों की भी गहन यात्रायें की हैं। इसमें विदेश में पली-बढ़ी उनकी नन्ही पौत्री अन्ना के बालमन की खानाबदोश यात्रायें हैं। इसमें एक तरफ़ पश्चिमी सभ्यता के अपने हठीले तर्कों पर अड़ी अन्ना है तो दूसरी तरफ़ उसे भारतीय संस्कारों से समृद्ध करने की दादी की उतावली, दोनों की टकराहट से जो मोहबंध बनते हैं वही स्मृतिकार की उपलब्धि है।

पुस्तक की शुरुआत फ़रवरी की बर्फीली सर्दियों में उनके बोस्टन आगमन से होती है। पहला अध्याय ''देस में रहेंगे, परदेस में रहेंगे, हम रावरे ही कहलायेंगे'' को डायरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें कई रोचक प्रसंगों का वर्णन है। लेखिका बोस्टन अपने बेटे के पास रहने गई और वहाँ ज़िन्दगी की आपा-धापी में व्यस्त बेटे से मिलने के बाद जिजीविषा और सभ्यता के विकास की विडम्बना को शिद्दत से महसूस करती हैं। लेखिका के ये अनुभव वास्तव में उन हजारों युवाओं

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470 003 मो. 9165577280